ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 2, Issue 3, March 2012 Impact Factor 2.809 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य एक अनुशीलन

डॉ. नवनीत वर्मा, व्याख्याता (हिन्दी)
चौ. ब.रा.गो. राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

कहानी साहित्य को समृद्ध करने में महिला लेखिकाओं का योगदान सराहनीय रहा है। नारी के अन्तरमन को वाणी देने में उनकी कहानियाँ सफल रही है। महिला कहानीकारों में अमृता प्रीतम, मन्नू भंडारी, ऊषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, मैत्रयी पुष्पा आदि की रचनाएँ नारी के विद्रोह की भंगिमाओं से ओत–प्रोत हैं। इनकी कहानियों में नारी जीवन का यर्थाथांकन हुआ है।

इन महिला कहानीकारों क मध्य मन्नू जी विशिष्ट स्थान रखती हैं। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 में मध्यप्रदेश भानपुरा में हुआ। लेखकीय व्यक्तित्व इनको विरासत में मिला। इनके पिता श्री सुख सम्पत राय भंडारी प्रतिष्ठित पत्रकार और लेखक थे। एम.ए. की शिक्षा, अजमेर, राजस्थान में प्राप्त की। तत्पश्चात् कुछ समय कलकत्ता में अध्यापन कार्य किया तथा बाद में दिल्ली के महिला कॉलेज में प्राध्यापिका बन गई।

मन्नू जी की साहित्यिक दृष्टि इनती पारदर्शी है कि उनकी कहानियों के उस पार जीवन को स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी कहानियों में जीवन की अन्तरंग अनुभूतियों के अछूते प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं। इस बात का स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने स्वयं कहा है कि "कभी सम्पर्क में आए हाड–माँस के ये जीते जागते पात्र, कहीं अपने ध्वस्त स्वप्नों और महत्त्वाकांक्षाओं के ढेर, कहीं व्यक्ति की व्यथा, कहीं जाति की त्रासदी, तो कहीं पूरी पीढ़ी की विडम्बना ही मेरी कहानियों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। मेरी कहानियों के पीछे जो असली कहानियां हैं, उनके पात्रों के साथ मेरा गहरा सम्बन्ध है, उनकी घटनाओं में से कुछ की साक्षी रही हूँ तो कुछ की साझेदार।"[1] निस्संदेह उनके अनुभवों की तपन ने उन्हें छठे दशक की अग्रणी लेखिका का जामा पहनाया।

"मेरा जुड़ाव यदि रहा है तो अपने देश ..... व चारों ओर फैली, बिखरी जिन्दगी से, जिसे मैंने नंगी आंखों से देखा, बिना किसी वाद का चश्मा लगाए, मेरी रचनाएँ इस बात का प्रमाण है।"[2]

अपनी कहानियों के माध्यम से इन्होंने जो कुछ भी समाज को दिया, उसमें वैशिष्ट्य यह है कि उसमें यथार्थ समाज और संस्कृति का चित्रण है तथा विशिष्ट शैली क माध्यम से पाठकों के सम्मुख अभिव्यक्त किया है।

'मैं हार गयी' मन्नू जी का प्रथम कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह की कहानियां मानवीय अनुभूति के धरातल पर रची गई है। ये ऐसी रचनाएं हैं, जिनके पात्र दुनिया से परे संवेदनाओं और अनुभवों की प्रमाणिक भूमि पर अपने सपने रचते हैं। ये सपने परिस्थितियों–परिवेश और अन्याय की परम्पराओं के दबाव के सामने कभी–कभी थकते और निराश होते भले ही दिखते हों, पर टूटते कभी नहीं। पुनः पुनः जीवित हो उठते हैं इसमें 12 कहानियां संग्रहित हैं।

'ईसा के घर इंसान' कहानी में मन्नू जी ने सहज प्रेम भावना को निरूपित किया है। 'गीत का चुम्बन' में मन्नू जी नये आदर्श एवम् "नैतिक बोध की स्थापना करने की चेष्ठा हैं।" 'जीत बाजी की हार' कहानी में लेखिका ने नारी को मातृत्व पर न्यौछावर होने की सीख दी है क्योंकि उनका चिन्तन है कि मातृत्व के बिना नारी अधूरी है। 'सयानी बुआ' में भी वात्सल्य का स्पर्श मन को सामान्य बना देता है। 'पंडित गजाधर शास्त्री' में अहम् से पीड़ित व्यक्ति का चरित्र चित्रण है। व्यक्ति आत्म प्रशंसा में इतना लिप्त है कि वह अपनी चेतना के स्वर को भी नहीं सुन पाता। 'कील और कसक' में अतृप्त इच्छाएं कील की वेदना बनकर मन में कसक पैदा करती हैं। 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'दो कलाकार', 'श्मशान', 'दीवार, बच्चे और बरसात', 'मैं हार गई' आदि कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूपों, रिश्ते नातों को एवम् भ्रष्ट राजनीति पर प्रहार करती है।

'मैं हार गयी' राजनेता पर व्यंग्य कसा है कि नेता कुर्सी पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है परन्तु वह गीता के उपदेश हमेशा सुनाता है। ऐसी विकट स्थितियों को देखकर लेखिका हार जाती है और स्वीकार करती है कि मैं हार गई।[3]

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' में भी आठ कहानियाँ हैं। आधुनिक सभ्यता जो कि अनेक भौतिक संसाधनों को महत्त्व देती है, जो हृदय के धरातल से अपरिचित है, जिसमें मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा चरम पर है ऐसी ही मर्मस्पर्शी संवेदनाओं का चित्रण मन्नू जी ने इस कहानी संग्रह में किया है।

'अकेली' में बुआ की मनोभावनाओं और मानसिक कष्ट का अंकन अत्यन्त मर्मस्पर्शी है वह जीवन बिताने के लिए अनेक प्रसंगों को खोजती है। 'खोटे सिक्के' में लेखिका ने एक सामान्य एवं गरीब व्यक्ति की महत्त्वहीनता को प्रदर्शित किया है। 'चश्मे'

कहानी का पात्र आधुनिक व्यक्ति का चश्मा मात्र सुख भोगना चाहता है, त्याग करना नहीं। उसकी पत्नी निराशापूर्ण जीवन व्यतीत करती है। 'घुटन' में मोना व अरूण की अधूरी प्रेम कहानी है, जिसमें माँ अपनी बेटी की कमाई खाने के लिए विवश है। माँ आर्थिक समस्याओं के कारण इतनी मजबूर व स्वार्थी हो जाती है कि बेटी की शादी नहीं करना चाहती। मोना घुटन की पीड़ा से गुजरती है, जिसका अन्तरंग चित्रण इस कहानी में हुआ है। मन्नू भंडारी का तृतीय संग्रह कहानी संग्रह 'यही सच है' नाम से 1994 में प्रकाशित हुआ है।

मन्नू जी की कहानियाँ न केवल इस लेखनीय चलन की काट करती है बल्कि भारतीय नारी को एक छवि प्रदान करती है। मन्नू जी इस बात का ध्यान रखती है कि कहानियों का यथार्थ, कहानी के कलात्मक संतुलन पर भारी न पड़े 'यही सच है' मन्नू भंडारी की अनेक कहानियों का बहुतचर्चित संग्रह है 'क्षय' कहानी में नायिका स्कूल की नौकरी व ड्यूटी से इतना थक जाती है कि वह आकांक्षा करती है कि भगवान उसे उठा ले। अन्त में उसकी इच्छाओं को क्षय होना शुरू हो जाता।

'रानी का चबूतरा' में नारी जीवन की विवशताएं हैं जो भारतीय ग्रामीण जीवन की विवशताएँ है। नारी के स्वाभिमान को संघर्षों के साथ रखकर कहानी में रोचकता प्रदान की गई। 'तीसरी आदमी' में शकुन का पति एक तीसरे आदमी जो एक लेखक है को लेकर अपनी पत्नी पर संदेह करता है किन्तु प्रमाणित करने में असमर्थ होता है। 'नकली हीरे' में मन्नू जी ने व्यक्त किया है कि मनुष्य केवल भौतिक उपलब्धियों और साधनों से स्वयं को संतुष्ट नहीं कर पाता जितना की हृदय की पूर्णता से करता है।

'नशा' कहानी एक बोझिल दाम्पत्य जीवन की कहानी है। आनन्दी (पत्नी) व किशनू (पुत्र) अत्यन्त दुःखी है। आनन्दी पति से डरती है और वादा करती है कि वह जी तोड़ मेहनत करके पैसे जुटाएगी, जिससे पति की शराब की व्यवस्था होगी।

इस प्रकार मन्नू जी ने बताया कि स्त्री सम्मान, स्त्री स्वाभिमान व स्त्री प्रतिष्ठा पुरुष के स्वभाव व जिद्द के आगे कोई महत्त्व नहीं रखती।

इसी तरह 'सजा', 'रानी मां का चबूतरा', 'इनकम टैक्स और नींद' आदि ऐसी कहानियां है जिसमें झूठी महिमा रखते हुए पात्र दुःखी रहते हैं। 'सजा' में पिता के बिना बच्चे शैश्वास्था में ही प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर लेते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि वह भारतीय नारी जिसने अपने पंखों की उड़ान अपने घर परिवार तक ही सीमित रखी वह अपने अस्तित्व को छोटे पर्दे तक ही

समेटे रही, वही नारी आज केवल श्रद्धा न होकर समस्त समाज की पथ प्रदर्शिका बनी हुई है। वह आज उन समस्त अन्यायकारी दबाव व बंधनों को उखाड़ फेंकना चाहती है जो समाज के लिए केवल सड़ास पैदा करने का काम करते हैं।

अतः स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मन्नू जी एक सफल कहानी लेखिका के साथ ही एक महान् कलाकार भी है। उनकी यह महानता आज भी निखरती जा रही है। उनसे हिन्दी और हिन्दी के पाठकों को अभी भी बहुत कुछ प्राप्त करने की आशा है।

संदर्भ

1. भूमिका (मेरी प्रिय कहानियाँ : कहानी संग्रह) – मन्नू भण्डारी
2. भूमिका (मेरी प्रिय कहानियाँ : कहानी संग्रह) – मन्नू भण्डारी
3. मै हार गई कहानी संग्रह, मन्नू भंडारी, पृ.सं. 143